Adda247

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नेट-ब्यूरो

विषय: **भारतीय ज्ञान प्रणाली** Code No. : 103

पाठ्यक्रम

इकाई १: भारतीय दार्शनिक प्रणाली - भाग (अ)

चौदह (चतुर्दश) विद्यास्थान (प्राचीन भारत में शिक्षा की १४ शाखाएँ) - पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र, छह-वेदांग (शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, कल्प) और चार वेद- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) उन के विषय एवं सामान्य विवरण|

उपवेद एवं उन के विषय एवं सामान्य विवरण |

विविध शास्त्रों के नाम एवं उन के विषय एवं सामान्य विवरण |
अठारह (१८) पुराण, उनके नाम और पुराणों के पांच सामान्य लक्षण- सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित| वेदांगों के नाम, वेदांगों में से प्रत्येक पर विवरण और उनमें से प्रत्येक के उद्देश्य- उनमें से प्रत्येक की वैज्ञानिक प्रकृति

ध्वन्यात्मकता और व्याकरण; संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के उच्चारण की वैज्ञानिक प्रकृति| शास्त्रों के नाम।

इकाई २: भारतीय दार्शनिक प्रणाली - भाग (ब)

धर्म, अर्थ और समाज पर भारतीय उपदेश, भगवद्गीता, अर्थशास्त्र, गुरुकुल प्रणाली, तथा नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला आदि की जानकारी
इस इकाई में अपेक्षित है (अ) विषय का परिचय; (ब) ग्रंथ, लेखक और उनका योगदान।

नास्तिक दर्शन: चार्वाक, जैन और बौद्ध दर्शन|
आस्तिक दर्शन: न्याय-वैशेषिक, सांख्य और योग, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा (वेदांत)

प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली: नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, वलभी, ओदन्तपुरी, मिथिला, कांची, नादिया, पुष्पगिरि, नागार्जुनकोंडा, शारदापीठ (काश्मीर), उज्जैन, जगद्दल और सोमपुर।
तर्कशास्त्र: प्रमाण-प्रत्यक्ष, अनुमन, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि | प्रमाता, प्रमाण, प्रमेय और प्रमा- स्वातःप्रमण्य और परतः प्रामाण्य | शब्दशक्तियाँ- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना, तात्पर्य | हेतुलक्षण और हेत्वभास लक्षण- कारण और भ्रांति |

पंच अधिकरण प्रणाली- विषय, संशय, पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष और संगति |
धर्मपुरुषार्थ, अर्थ-पुरुषार्थ और समाज: चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष | प्रत्येक पुरुषार्थ की परिभाषा और धर्म का अर्थ- मूल और व्युत्पत्ति |

धर्म: महाभारत, मनुस्मृति, वैशेषिक सूत्र आदि विभिन्न ग्रंथों से परिभाषाएं और अर्थ | काम्य, नित्य, निषिद्ध, नैमित्तिक, प्रायश्चित और उपासना | अर्थ पुरुषार्थ में "अर्थ" शब्द का अर्थ- मूल और व्युत्पत्ति तीर्थयात्रा, त्यौहार, सप्तपुरी, बारह ज्योतिर्लिंग के विषय में सामाजिक दृष्टिकोण और भारत की एकता एवं अखण्डता के लिए इन का महत्त्व |

भगवद्गीता: भगवद्गीता अध्याय सं. १६ -दैवी और आसुरी संपत् |

रामायण: राम के गुण-जैसा वाल्मीकि रामायण में वर्णित है | राज्य प्रशासन से सम्बंधित "कच्चित् सर्ग" सर्ग का अध्ययन और अर्थ का विवरण |

महाभारत: महाभारत की समीक्षा एक ज्ञान के भंडार के रूप में | विदुरनीति और राज धर्म पर महाभारत के महत्वपूर्ण उपदेश |

अर्थशास्त्र: अर्थशास्त्र का महत्व और अर्थशास्त्र में वर्णित विषयों का सामान्य परिचय। योगक्षेम (राजनीति-नीति के कल्याणकारी उपाय), सप्तांग (राज्य के सात अंग), षद्गुण (राज्य के छह उपाय), राजधर्म (राजा का कर्तव्य), राजमंडल (राजाओं का मंडल), और धर्म जैसे आधुनिक राज्य शिल्प की सांस्कृतिक नींव (आदेश), अर्थशास्त्र में जो मूल चिन्तन है उस पर अध्ययन |

समाज एवं नागरिक: भारतीय ज्ञान प्रणाली के विविध ग्रंथों में सभी के कल्याण के लिए बताए गए उपाय, स्वस्थवृत्त की अवधारणा।
भारतीय भाषाएं और साहित्य: भारतीय भाषाएं और उनकी उच्चारण प्रणाली | संस्कृत भाषा और भारतीय भाषाओं से संस्कृत का संबंध | साहित्यिक रचनाओं, छन्द आदि के लिए संस्कृत साहित्य का भारतीय भाषाओं पर प्रभाव | भारतीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियाँ और विश्व भाषाओं में उनके प्रथम, प्रधान एवं प्रतिष्ठित अनुवाद एवं अनुवादक |

इकाई ३: ज्योतिश्शास्त्र

समय के मान: वेद में समय के विभाजन: वर्ष, महीने और दिन, तैत्तिरीय-ब्राह्मण में 13 महीनों के नाम,12 अर्धमाहों के नाम, चंद्र वर्ष के 354 दिन, महीने और अधिकमास, सामान्य समय गणना, समय

की गणना के तरीके, चांद्र-दिवस, सौर-दिवस, सौर-वर्ष, चंद्र-सौर-वर्ष, सावनदिन, शक से कलि, शक से जोवियन वर्ष, विक्रम-संवत से कलि, कोल्लम वर्ष से कलि।

भारतीय कैलेंडर प्रणाली: पंचांग: पंचांग के पांच तत्व, संगणना नक्षत्र, तिथि, योग, करण और वर। सूर्य-नक्षत्र, सौर दिनदर्शिका (कैलेंडर), विक्रम-संवत और शालिवाहन-संवत - राष्ट्रीय कैलेंडर (राष्ट्रीय दिनदर्शिका)।

सिद्धान्त ग्रंथों में वर्णित ग्रहों की स्थिति (आर्यभटीय): अहर्गण की गणना, महायुग में ग्रहों की परिक्रमण संख्या, ग्रहों की मध्यम-स्थिति, मंदसंस्कार, शीघ्रसंस्कार, स्फुटग्रह, आर्यभट से नीलकंठ (अर्ध-हेलिओसेंट्रिक मॉडल) तक ग्रहों के मॉडल का विकास, अयनांश निर्धारित करने के लिए विभिन्न तरीके ।

करण और वाक्य ग्रंथों से ग्रहों की स्थिति: कराणकुतूहल, ग्रहलाघव आदि कराण ग्रंथों में दिए गए सरलीकृत प्रक्रियाओं से ग्रहों की स्थिति प्राप्त करना, वररुचि और माधव के चंद्रवाक्य और उनके लिए वाक्य-संस्कार प्रक्रिया वाक्य प्रणाली का उपयोग करके सूर्य और चंद्रमा के स्थितियाँ प्राप्त करना, मासवाक्यों, संक्रांति-वाक्यों और नक्षत्र-वाक्यों का महत्व।

यूनिट ४: भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली

पाठ्यक्रम सीमा: आयुर्वेद, सिद्ध, योग, लोक, और जनजातीय चिकित्सा पद्धतियां

भारत में चिकित्सा ज्ञान की लोक और शास्त्रीय धाराएं | लोक और जनजातीय चिकित्सा - ८००० पौधे, घरेलू उपचार, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, हड्डी की स्थापना, पारंपरिक जन्म परिचारक, विष उपचारक।

आयुर्वेद: ऐतिहासिक विकास और महत्वपूर्ण घटनाये, व्यक्तित्व, पाठ स्रोत, क्षेत्रीय परंपराएं | चिकित्सा ज्ञान के निर्माण और मान्यता के लिए आयुर्वेद में प्रमाणों का अनुप्रयोग | मुख्य विशेषताएं - प्रकृति केंद्रित दृष्टिकोण, व्यक्ति केंद्रित दृष्टिकोण, आधि-व्याधि चिकित्सा, पौधे, पशु और खनिज स्रोतों के औषध-कोष, बहु-घटक सूत्रीकरण और खुराक के रूप, उपचार के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण - जीवनशैली, आहार और दवा, स्वस्थ दीर्घ आयु |

आयुर्वेद की मूलभूत अवधारणाएं - दोष धातु मल सिद्धांत, स्वास्थ्य की परिभाषा (स्वस्थ), दैनिक दिनचर्या (दिनचर्या), मौसमी दिनचर्या (ऋतुचर्या), सद्‌वृत्ति (अच्छे आचरण)| रोगों की परिभाषा और वर्गीकरण - आधिदैविक, आध्यात्मिका, आधिभौतिक, एवं अन्य वर्गीकरण | आयुर्वेद में उपचार का दायरा और वर्गीकरण | आयुर्वेद की आठ क्लीनिकल विशेषताएं | भारत और दुनिया में आयुर्वेद की वर्तमान स्थिति |

सिद्ध: ऐतिहासिक विकास और महत्वपूर्ण घटनाये, व्यक्तित्व, पाठ्य स्रोत | मूलभूत अवधारणाएं – त्रिदोष | नाड़ी परीक्षा, मर्म विद्या उपचार, वनस्पति धातु सूत्रीकरण | स्वास्थ्य और रोग की अवधारणा,

निवारक चिकित्सा | रोगों के प्रबंधन के लिए दृष्टिकोण | भारत और विश्व में सिद्ध चिकित्सा पद्धति की वर्तमान स्थिति |

योग: ऐतिहासिक विकास और और महत्वपूर्ण घटनाये, व्यक्तित्व, पाठ्य स्रोत| योग की परिभाषा, स्वास्थ्य और कल्याण के लिए चिकित्सा के रूप में योग |अष्टांग योग: आसन, प्राणायाम और ध्यान के स्वास्थ्य लाभ | शरीर को शुद्ध करने की योगिक विधियाँ | आधुनिक दुनिया में चिकित्सा के रूप में योग का अनुप्रयोग |

इकाई ५: स्थापत्य कला

सिंधु घाटी सभ्यता : शहरी नियोजन - धौलवीरा, हिंदू मंदिर वास्तुकला - नागर, द्रविड़ और वेसर शैली के मंदिरों की प्रारंभिक अवधारणाएं |

भारत की प्राचीन और मध्यकालीन संरचनाओं का संक्षिप्त ज्ञान: बुद्ध और जैन मंदिर - उदयगिरि - सांची - सारनाथ - नालंदा, चट्टान और गुफा मंदिर- एलीफेंटा- जागेश्वरी - अजंता और एलोरा, हिमालयी मंदिर- केदारनाथ-तुंगमठ-जगेश्वर- बालेश्वर |

प्राचीन और मध्यकालीन मंदिर: मुंडेश्वरी देवी मंदिर- दशावतार विष्णु मंदिर, देवगढ़ - खजुराहो मंदिर- लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर- टेराकोटा मंदिर, विष्णुपुर- बादामी के मंदिर, ऐहोल (चालुक्य मंदिर) - कांची और महाबलीपुरम मंदिर- चोल मंदिर, सूर्य मंदिर -कोणार्क, मोढेरा, कटारमल (अल्मोड़ा) और मार्तंड (अनंतनाग)

वास्तुकला शैली, काल और देवता का प्रारंभिक ज्ञान |

प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय जल भंडारण और संचयन प्रणाली - कल्लनई बांध- अदलेज बावड़ी, राजस्थान की तनाका तकनीक-बिहार की अहार पाइंस।

वास्तुशास्त्र की मूल बातें (केवल प्राथमिक अवधारणा)

इकाई ६: भारतीय गणित

शुल्बसूत्रों में ज्यामिति: शुल्बसूत्र ग्रंथों में दिए गए करणी (सर्ड) के लिए अभिव्यक्ति, लंब समद्विभाजक प्राप्त करने की विधियाँ, लंबवत द्विभाजक का निर्माण: जीवा-मोडने विधि, बोधयान की वर्ग बनाने की विधि, बोधायन-पायथागॉरियन प्रमेय |

दशमलव स्थानीय मान प्रणाली: वेदों में संख्याएँ, कोटि से महा-आघ, अक्षौहिणी और अन्य नामित अंक, संख्याओं की तीन अलग-अलग प्रणालियाँ: आर्यभटीय, भूतसंख्या तथा कटपयादि प्रणालियाँ |

Adda247

आर्यभटीय में अंकगणित और त्रिकोणमिति तथा इसके आगे का विकास: वर्गमूल और घन-मूल, आर्यभट की ज्या-तालिका (साइन-टेबल), तंत्रसंग्रह में इसका संशोधन, ज्या और कोटिज्या के लिए माधवश्रृंखला, करणपद्धति से ज्या मान प्राप्त् करने के विभिन्न तरीके |

ब्रह्मगुप्त: धनसंख्या, ऋणसंख्या और शून्य का गणित, रैखिक और द्विघात समीकरणों का समाधान, चक्रीय चतुर्भुज |

लीलावती: अंकगणितीय प्रक्रियायेँ: विपरीत विधि, अनुमान का नियम, द्विघात-समीकरणों का समाधान, मिश्रण, संयोजन, श्रेढी। समतल आकृतियाँ: समकोण त्रिभुजों का अनुप्रयोग, सूची के प्रश्न, चतुर्भुज का निर्माण, चक्रीय चतुर्भुज,व्यास और परिधि के सम्बन्ध, वृत्त का क्षेत्रफल, गोल का पृष्ठीय क्षेत्रफल, गोल का आयतन |

कुट्टक-प्रक्रिया तथा निरंतर-अंश: आर्यभट और ब्रह्मगुप्त द्वारा कुट्टक विधि, वल्लुपसंहार और निरंतर अंश, वल्लुपसंहार विधि I और II करणपद्धति से, दृक्करण ग्रन्थ में निकटतम-पूर्णांक-निरंतर-अंश |

केरल स्कूल: π के लिए माधवीयश्रेढी, अंत्यसंस्कार, π के लिए विभिन्न पिरणतमाधवीयश्रेढी, पुतुमन-सोमयाजीश्रेढी, नीलकण्ठ द्वारा π की अपरिमेयता, नीलकण्ठ और अनंत ज्यामितीय श्रृंखला के योग की धारणा |

इकाई ७: रसायन और धातु विज्ञान

सांख्य पातंजल प्रणाली: प्रकृति –मूल घटक एवं उनके अन्तःक्रियाएँ, ऊर्जा का संरक्षण एवं ऊर्जा का रूपान्तरण, कार्योत्पादन उद्भावना का सिद्धांत, साहचर्य का सिद्धांत, ऊर्जा का निस्तारण एवं भण्डारण, ऊर्जा तथा द्रव्यमान का क्षय एवं उनका अवस्थारहित प्रकृति में सम्मिलन, पदार्थ का उद्भव, मूलभूत परमाणु इकाई का उद्भव, रासायनिक विश्लेषण एवं संश्लेषण, तत्व एवं परमाणु |

प्राचीन भारत के आयुर्विज्ञान में रसायन विज्ञान: भूत की भौतिक विशेषताएं, महाभूत, मिश्रण, पदार्थो की विशेषताएं, रासायनिक योग में आणविक गुणों का निर्माण, रंगों का गुणधर्म, भार तथा क्षमता का मापन, सूक्ष्म दृश्य का आकार |

वेदान्त के दृष्टिकोण से पदार्थ के विभिन्न रूपों का उद्भव | बौद्धों एवं जैनों का परमाणु सिद्धांत |

न्याय वैशेषिक रासायनिक सिद्धांत: परमाणु संयोजनों का सिद्धांत, रासायनिक संयोजन सम एवं विषम भौतिक यौगिक, गतिशील संपर्क का सिद्धांत (विष्टम्भ), रासायनिक क्रिया एवं ऊष्मा, वाचस्पति: का तीन अक्ष (द्वि-भौतिक यौगिकों के अवयवों का सचित्र निरूपण), आणविक गति की अवधारणा (परिस्पंद) |

बृहतसंहिता में रसायन शास्त्र के विचार (वज्रलेप/वज्रसङ्घात बनाना; गन्धयुक्ति)

धातुकर्म विरासत: अर्थशास्त्र - सोने, चांदी एवं अन्य धातुओं का वर्णन करने वाला प्रथम ग्रंथ, प्राचीन और मध्ययुगीन काल में भारतीय ग्रंथों में वर्णित सोना, चांदी, तांबा, लोहा, टिन, पारा, सीसा और जस्ता का प्रसंस्करण, रसार्णव एवं रसरत्नसमुच्चय में वर्णित जस्ता आसवन |

भारतीय रसायन शास्त्र में अम्ल एवं क्षार की अवधारणाएँ: कार्बनिक अम्ल (फल,वनस्पति आधारित), पौधा-भस्म आधारित क्षार से लेकर मध्ययुगीन काल के खनिज अम्ल काल तक |

इकाई ८: जीवन विज्ञान, कृषि और पारिस्थितिकी

पाठ्यक्रम सीमा: कृषि शास्त्र, मृगायुर्वेद, पाकशास्त्र, पवित्र उपवन

कृषिशास्त्र, वृक्षायुर्वेद: ऐतिहासिक विकास और महत्वपूर्ण घटनाये, व्यक्तित्व, पाठ स्रोत - उपवन विनोद, कृषिपराशर, बृहत संहिता, कृषि गीता | मनोरंजन उद्यान, प्राचीन भारत में कृषि, पौधों के रोग और उनका प्रबंधन, कीट नियंत्रण, पौधों के लिए खाद, प्लांट ग्राफ्टिंग तकनीक |

मृगायुर्वेद: ऐतिहासिक विकास और महत्वपूर्ण घटनाये, व्यक्तित्व, पाठ स्रोत - पालकाप्यसंहिता, गजायुर्वेद, शालिहोत्रसंहिता, अश्वायुर्वेद, मृगपक्षिशास्त्र | जानवरों का वर्गीकरण और विवरण रोगों का निदान और उपचार |

पाकशास्त्र: ऐतिहासिक विकास और महत्वपूर्ण घटनाये, व्यक्तित्व, पाठ्य स्रोत - पाकदर्पण, जनकुतूहल, क्षेमकुतूहल, पथ्यापथ्यविनिश्चय, संतुलित आहार की अवधारणा, भोजन के स्रोत और वर्गीकरण, खाद्य पदार्थों के स्वस्थ और अस्वास्थ्यकर संयोजन, स्वस्थ और संतुलित विधि, पकाने की विधि, व्यक्ति के स्थान, मौसम और संविधान के अनुसार भोजन को अनुकूलित करना | संतुलित आहार बनाने के लिए आठ कारकों पर विचार, खाने के सही तरीके, अस्वास्थ्यकर भोजन की आदतें

पवित्र वन: पवित्र पौधे लगाने का फल- तुलसी, चन्दन, शमी, अर्क, पलाश, खदिर, देवदारु, सुपारी, नारियल,केले आदि | सामाजिक वानिकी के बारे में-वृक्षारोपण से फल- जैसे कि प्रसिद्ध ग्रन्थों में बताया गया है। नीम, आम, दुधारु-वृक्ष-कटहल,अश्वत्थ, औदुम्बर (गूलर), पाकड़ (Ficus lacor), वटवृक्ष (बगरद-Banyan tree) ; इमली, काबिड,बिल्व,चन्दन,अशोक, आंवला, पुन्नाग, शिंशपा, सप्तपर्ण, सप्तरंगी ।आयुर्वेदीय औषधि वृक्ष एवं पौधे- अर्जुन,चन्दन, शमी, अर्क, पलाश, खदिर, देवदारु,कुटज, सर्पगन्धा, हडजोड, इंगुदी, सप्तरंगी, विषमुष्टि,उशीर-घास,घृतकुमारी का सामान्य विवरण

इकाई ९: कला

भरत मुनि के नाट्यशास्त्र तथा अभिनय दर्पण का परिचय, नवरस का वर्णन, आठ भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधाओं का परिचय - भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम, कथाकली, कुचिपुड़ी, कथक, ओडिसी,

मणीपुरी एवं सात्रिय| भारतीय नृत्य एवं भारतीय चित्रकला पर गीत-गोविन्द, रामायण तथा महाभारत का प्रभाव (मधुबनी, पटचित्र, फड़, कांगरा) |

भारतीय शास्त्रीय संगीत का वर्गीकरण: हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक, भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन विधाएं (ध्रुपद, ख्याल और तराना) कर्नाटक संगीत (वर्णं एवं कृति) ताल एवं लय विधा का सर्वेक्षण

भारत की लोककला, आदिवासी तथा आधुनिक कला विधाओं का परिचय। लोक, आदिवासी, पारंपरिक, अनुष्ठानिक प्रदर्शनों तथा अभिनय की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन - नृत्य, संगीत, कहानीकला एवं मंचकला

क्षेत्रीय मंचकला अभिनय का परिचय- कुडीअट्टम, यक्षगान, छऊ, जत्रा, लैहारोबा, थेय्यम, अंकियनात, पांडवानी, चिंदू भागवत, भांड, जानना और अन्य। पारंपरिक ग्रंथों को कला विधाओं पर प्रभाव)

भारतीय कठपुतली नृत्य का वर्गीकरण - कठपुतली, तोलू बोम्मालता, रावण छाया, तोलपावकुत्तु, पंचतंत्र का कठपुतली नृत्य कला पर प्रभाव

यूनेस्को की आई.सी.एच. सूची में प्रतिनिधित्व करने वाले भारतीय कला विधाओं तथा सांस्कृतिक त्यौहारों का वर्णन तथा नामांकन प्रक्रिया का महत्व।

कटपयादि में मेलाकार्ता राग नामपद्धति का अनुप्रयोग; कर्नाटक संगीत में विकासक्रम के चरण का परिचय: चतुर्दंण्दी से आधुनिक संगीत सहगान पद्धति तक की यात्रा।

इकाई १०: प्राचीन भारत और विश्व

पश्चिमी दुनिया में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का प्रभाव (मध्य एशिया और यूरोप): प्राचीन यूरोपीय भाषाओं और उनकी पौराणिक कथाओं पर संस्कृत का प्रभाव | प्राचीन ग्रीस के विचारकों पर भारतीय दर्शन का प्रभाव: *थेल्स,हेराक्लितुस,* पाइथागोरस, सुकरात, प्लेटो, प्लोटिनस, नियो-प्लैटोनिज्म आदि। रोमन साम्राज्य और अन्य प्राचीन सभ्यताओं के साथ व्यापार | मेसोपोटामिया, सुमेरिया, कासाइट्स, फारस, यज़ीदी आदि में सांस्कृतिक प्रभाव।

पूर्वी दुनिया में भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव (दक्षिण पूर्व एशिया): भारतीय संस्कृति से प्रभावित विभिन्न साम्राज्य: मातरम का साम्राज्य, मूर्ति पूजक साम्राज्य (849-1297 सीई) (बर्मा), खमेर साम्राज्य (802-1463 सीई), सेबू के राजनते, अयुत्या साम्राज्य युग (1350-1767), श्री विजय साम्राज्य (650 - 1377 सीई) आदि।

दक्षिण-पूर्व एशिया के भौगोलिक नामों पर भारतीय प्रभाव

भारतीय मंदिरों और वास्तुकला का प्रभाव: अंकोर (कंबोडिया), पुरा बेसाकिह (बाली, इंडोनेशिया), प्रंबनन (इंडोनेशिया), बाटू गुफाएं (सेलंगोर, मलेशिया), वैट फाउ (चंपासक, लाओस), श्री वीरमकालियाममान (सिंगापुर) में बेयोन मंदिर), मरिअम्मन मंदिर (वियतनाम) आदि।

दक्षिण पूर्व एशिया के चित्रों, रंगमंच और नृत्य पर रामायण और महाभारत का प्रभाव

सारसमुच्चय (जावा और बाली की कानून की किताबें) पर मनुस्मृति का प्रभाव
संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं का प्रभाव: ब्राह्मी लिपि और बर्मा, थाई, लाओस, कंबोडिया की लेखन एवं भाषाओं पर इसका प्रभाव। लगुना कॉपरप्लेट (फिलीपीन द्वीप समूह), जापान में सिद्धम लिपि आदि।

हिंदू देवताओं का प्रभाव: ब्रह्म, विष्णु, शिव, सरस्वती, , गणेश, राम, गरुड़, नाग आदि।

श्रीलंका और अफ्रीका से संपर्क : कपड़ा, प्रौद्योगिकी और व्यापार: श्रीलंका में बौद्ध धर्म, श्रीलंका में चोल का प्रभाव, साहित्य, जातक कहानियां, अफ्रीका और भारतीय वस्त्र, अफ्रीका में स्टोन कार्वर्स, सोकोट्रा द्वीप से शिलालेख। कंबोडिया संस्कृत शिलालेख

आधुनिक पश्चिमी विचारकों पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव : इमर्सन, व्हिटमैन और थोरो, क्रिस्टोफर ईशरवुड, एल्डस हक्सले, जोसेफ कैंपबेल, एलन वाट्स, विलियम समरसेट मौघम। विलियम जेम्स, बीटल्स समूह , जॉर्ज हैरिसन, तुरीयसंगीतानंद। निकोलस टेस्ला, डेविड बोहम, इरविन श्रोडिंगर,कार्ल सगन, फ्रिटजॉफ कैप्रा, लैरी ब्रिलियंट, रामदास, डैनियल गोलेमैन, पैट्रिक गेडेस, डेनिस वाइट, लियोनार्ड ब्लूमफील्ड, स्टीव जॉब्स, मार्क जुकरबर्ग, आर्थर शोपेनहावर आदि| फर्डिनेंड डी सौसुरे, नोम चोम्स्की आदि।

विश्व पर योग का प्रभाव: पश्चिम पर प्रभाव छोड़ने वाले दार्शनिक –स्वामी विवेकानंद ,परमहंस योगानंद ,श्री अरबिंद ,महर्षि महेश योगी ,आचार्य रजनीश ,जे.कृष्णमूर्ति ,स्वामी शिवानंद,बी.के.एस.आयंगर ,श्री कृष्णामचारी| विविध क्षेत्रो पर योग का प्रभाव-१८ वीं शताब्दी से पश्चिमी कला,संस्कृति और फिल्म पर प्रभाव ,पश्चिमी साहित्य पर प्रभाव|